

# सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से महिलाओं का सामाजिक – आर्थिक विकास

Sunita Singh\*

Department of Sociology, Swami Vivekananda University, Sagar (MP)

*सार - सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन प्रत्येक वैज्ञानिक शोध प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। बिना पुनरावलोकन किये शोधकर्ता दिशाहीन होता है, इसके अभाव में हम एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते हैं। जब तक हमें यह ज्ञात न हो कि शोध के क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस प्रकार से कार्य किया गया है तथा उसके क्या परिणाम निकले हैं, तब तक हम न तो समस्या का निर्धारण कर सकते हैं और न ही उसकी रूपरेखा तैयार कर, कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं। अतः शोध कार्य की सफलता के लिए सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन अपरिहार्य है।*

-----X-----

## प्रस्तावना

इस अवधारणा का सीधा अर्थ यह है कि महिलाओं की परेशानियों को ध्यान में रखकर यदि आई.सी.टी. प्रोफेशन उनके लिए अनुकूल परिस्थितियों की सुविधा दिला सके तो निश्चित रूप से अन्य प्रोफेशनों की बजाय इस प्रौद्योगिकी में उनकी बेहतर भागीदारी के पर्याप्त अवसर बन सकते हैं।

मारहन मार्टिन: 1998 ने कहा था इन्टरनेट के प्रारम्भिक समय से ही उस पर पुरुषों का प्रभुत्व रहा परन्तु हाल के वर्षों के दौरान इसमें लड़कियों और महिलाओं की संख्या बढ़ी है। यह स्वागत योग्य है क्योंकि पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं अधिक कुशलता से इन्टरनेट का प्रयोग करती हैं। उनकी संख्या में और अधिक बढ़त अपेक्षित है, अन्यथा समाज के आर्थिक एवंशैक्षणिक वातावरण दुष्प्रभावित होगा।

रिकेर और साशरो: 2000 के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि अमेरिका में इन्टरनेट का उपयोग करने वालों में पुरुषों को पीछे छोड़ते हुए महिलाओं की संख्या अधिक हो चुकी है जो कि आशावादी भविष्य का प्रतीक है। चूंकि इन्टरनेट का श्रीगणेश अमेरिका से ही हुआ था, इसलिए इसकी सम्भावनाएं प्रबल हैं कि शीघ्र ही अन्य देशों में भी अमेरिका की ही भाँति आई.टी. क्षेत्र में महिलाएं अपनी कामयाबी पुरुषों की अपेक्षा अधिक कुशलता से अर्जित कर लेंगी।

द्वय आई.बी.एम. द्वारा चलाए गए एक सर्वेक्षण अध्ययन में इसकी पुष्टि की गयी कि विभिन्न व्यवसायों में लगे आई.सी.टी. के उपयोगकर्ताओं में महिलाओं की संख्या निश्चित रूप से पुरुषों से अधिक तो है ही साथ ही महिलाओं के कुशलतापूर्ण तौर-तरीकों से उद्यम भी अधिक लाभान्वित हो रहे।

द्वय असंतुलित अधिकार और असमानता बोध की जो गहरी पैठ महिलाओं में बनी हुई है, उससे इस नई प्रौद्योगिकी के बाद भी महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए समय तो लगेगा ही उन्हें उपयुक्त सामाजिक समर्थन भी मिलना चाहिए। इन विसंगतियों के बने रहने से प्रौद्योगिकी के साथ महिलाओं के सम्बन्धों में व्याप्त दोहरी मानसिकता की विडंबना को दूर कर पाना सम्भवतः कठिन होगा।

बैनर्जी एवं मित्तर: 1998 के प्रतिवेदन में उल्लेख किया गया है कि महिलाओं के कामकाज के अवसर सबसे पहले सिमटते हैं क्योंकि उनमें उन सरल कार्यों को करने की अधिक रुचि होती है जिनको आसानी से मशीनों द्वारा किया जा सकता है। महिलाओं में लचीलेपन का परम्परागत अभाव होता है परन्तु वस्तुतः इसका मूल कारण तो समाज में व्याप्त पितृसत्तात्मक परम्परा ही है। महिलाओं को केवल 'यह' या 'वह' करना सिखाया जाता है। पर क्यों किया जाना है, यह सिखाने का कोई प्रयास नहीं किया जाता। उनको प्रेशर कूकर जैसे श्रम बचत में सहायक उपकरण इसलिए नहीं दिए जाते थे

क्योंकि समाज में यह आम धारणा थी कि महिलाओं में टेक्नालॉजी की समुचित समझ का अभाव होता है।

परन्तु वेडली: 2000 ने अपने अध्ययन के सम्बन्ध में तमिल नाडु के करीमपुर के एक ब्राह्मण परिवार को काफी नजदीक से देखने-समझने का प्रयास किया उसने यह अनुभव किया कि इस परिवार में चार पीढ़ियों की महिलाओं की जीवन शैली, आर्थिक स्थिति, शिक्षा और आवश्यकताओं में बहुत अधिक विभिन्नता है। उसने तुलनात्मक रूप से यह अनुभव किया कि दादी-नानी की अपेक्षा नई पीढ़ी की महिलाओं के पास अधिक समय की गुंजाइश है, क्योंकि अब उनकी जीवन शैली परिष्कृत वैज्ञानिक उपकरणों से जुड़ गयी है। वाशिंग मशीन, फ्रिज, टी.वी., मिक्सी आदि के उपयोग के कारण बचे हुये समय का सदुपयोग आज की पीढ़ी अपने परिवार के हितार्थ इन्टरनेटवर्किंग में करना चाहती है।

सुश्री गोठोस्कर: 2000 ने मुम्बई में टेलीवर्किंग महिलाओं के एक समूह का अध्ययन किया जो हाई टेक्नालॉजी वाला कार्य कर रही थी किन्तु इसके बाद भी वे अपने प्रोफेशन के निचले पायदान पर ही थीं। घरेलू कार्य वर्कर बना रखा था किन्तु अपने प्रोफेशन में आगे बढ़ने की महत्वाकांक्षा उनके पास लगभग नहीं के बराबर था टेक्नालॉजी ने उनको नॉन स्टाप उनमें नहीं के बराबर थी। भारतीय महिलाओं में सम्भावनाओं की धारणाएं सीमाबद्ध हुआ करती हैं और उनके इन विचारों में परिवर्तन लाने की पर्याप्त सम्भावनायें हैं। आवश्यकता इस बात की है कि महिलाओं को सहयोग देने वाले संगठनों की भूमिका उनके प्रति कैसी है। उच्च स्तर पर कार्य कर रही महिलाओं के पास स्वाधीनता भी है और अपनी जीवन शैली को अपने अनुसार ढालने के अधिकार भी हैं, कुछ संस्थाओं ने जैसे- अहमदाबाद स्थित सेल्फ इम्प्लाइड वुमेन्स एसोसियशन (सेवा) और पश्चिम बंगाल के ग्रामीण बैंक ने अपने नीचे की श्रेणी में कार्य करने वाली सदस्यों को कुछ अधिक स्वाधीनता का लाभ दिया है और ऐसे ही संगठनों की आवश्यकता भी है। एक ऐसा ही उदाहरण लेटिन अमेरिकी देश गुयाना की ग्रामीण महिलाओं का है जिन्होंने अपने यहां एक कम्प्यूटर ऐडेड रिटेल चैन का सफलतापूर्वक स्वामित्व प्राप्त कर लिया क्योंकि इस संगठन में महिलाओं को जानबूझकर निचले स्तर पर रोके रखने के प्रयास किए जा रहे थे।

### सूचना प्रौद्योगिकी में महिलाओं की भूमिका

सर्वेक्षणों और अध्ययनों से यह तथ्य सामने आ रहे हैं कि इन्टरनेट के उपयोगकर्ताओं में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं का अनुपात अधिक है इससे यह स्पष्ट है कि महिलाओं के पास

एक्सेस की सुविधाएं अधिक है, औसतन सम्पन्न परिवारों की गृहणियों के पास इसका विकल्प होता है कि वे अपने घरेलू कार्यों में से समय बचाकर उसे कम्प्यूटर और इन्टरनेट सुविधाओं पर लगाए। विशेष रूप से तब जब घर के सदस्य किसी न किसी कार्य से घर के बाहर गए हुए हों। उनकी सुविधा के लिए ऐसी कई साइट भी हैं जो शिशुओं या नन्हे बच्चों के लिए को-आपरेटिव चाइल्ड केयरिंग की सुविधाएं उपलब्ध कराती है। इनकी सहायता से माताएं निश्चित होकर कम्प्यूटर पर समय दे सकती हैं। विकसित देशों में तो ऐसे टेली सेन्टर और नेट बेस्ड कम्प्यूनिटी सेन्टर काफी प्रचलित हो चुके हैं किन्तु महिलाओं की सक्रीय भूमिका सुनिश्चित कराने के लिए यह आवश्यक है कि उनका ऐसा कार्य समय निरापद और सुरक्षित बना रहे। यू.एन.डी.पी. ने इजिप्ट में ऐ ऐसे ही अभिनव पायलट प्रोजेक्ट को सहयोग दिया है।

कम विकसित देशों में साइबर कैफे और किआस्को की संख्या में पयाप्त वृद्धि हुई है। दक्षिण भारत में इन्टरनेट उपयोगी दक्षताओं का प्रसार कम लागत में किया जा रहा है। इसमें टेली वर्किंग का उज्ज्वल भविष्य पनप रहा है। आठ भारतीय नगरों में किए गये सर्वेक्षण में यह स्पष्ट हुआ कि बिना कामकाज वाली महिलाओं का 63 प्रतिशत इन कैफे के माध्यम से और 32 प्रतिशत महिलाएं अपने घरों से इन्टरनेट का उपयोग करती हैं इसके लिए विशेष रूप से कम आय, भाषा और साक्षरता की बाधाओं को समाप्त करने की आवश्यकता है। यह सर्वेक्षण स्पष्ट करते हैं कि कम्प्यूटरों के प्रसार से भारतीय ग्रामीण जनजीवन निश्चित रूप से उन्नत हुआ है। भारत के एम.एस. स्वामीनाथ रिसर्च फाउंडेशन के एक नालेज सेन्टर प्रोजेक्ट ने पांडिचेरी के चार ग्रामों को कनेक्ट किया है जो तमिल भाषा में स्थानीय सूचना प्रणाली से आबद्ध है। इससे कृषि जनित कार्य और उनकी मार्केटिंग को उन्नत स्वरूप मिला है। मेडिकल सुविधाओं तक पहुँचने में सुविधा हुई है।

महिलाएं ही इन कम्प्यूटर केन्द्रों को आपरेट करती हैं। इसका एक और लाभ साक्षरता है जिससे इसके और अधिक प्रसार की सम्भावनाएं बढ़ रही आन्ध्र प्रदेश में ग्रामीण महिलाओं के स्वःसहायता समूहों (एस.एच.जी.) के गठन से उनके उत्पादों की देश विदेश में इन्टरनेट के माध्यम से की जा रही मार्केटिंग को इतनी सफलता मिलती है कि अब बहुराष्ट्रीय कम्पनियों भी अपनी विक्रय क्षमताओं का अपने हितों में उपयोग किए जाने की पक्षधर बन गयी है। वहाँ की लगभग 60 लाख महिलाएं इन समूहों की सदस्य हैं जो निरन्तर लाभ अर्जित कर रही हैं। इसके साथ ही वे अनुकरणीय कर्जदार भी हैं जिन्होंने अब तक लिए 20 करोड़ रुपयों के ऋणों का 98 प्रतिशत निश्चित समय अवधि में भुगतान कर उदाहरण प्रस्तुत किया है। ऐसा अन्यत्र

सम्भव नहीं हो पाता परिणाम स्वरूप वहाँ कर्ज देने वाले बैंकों में प्रतिस्पर्धा है। क्योंकि बैंकों द्वारा दिए जाने वाले ऋणों की इस प्रकार वापसी अन्यत्र सम्भव नहीं है। इंग्लैण्ड के वर्मिघम शहर में हाईस्पीड इन्टरनेट एक्सेस सुविधा से अनेक गरीब महिलाओं के जीवन में सम्पन्नता आई है।

महिलाओं के लिए स्वरोजगार की अवधारणा अत्यधिक लाभप्रद है। क्योंकि इससे एक तो उनको मातृत्व का दायित्व निभा पाने में परेशानी नहीं होती और दूसरा यह कि वे अपने घरों में ही रहकर काम-काज के समय में अपनी सुविधानुसार परिवर्तन कर सकती है। इस सम्बन्ध में किए गए अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि अमेरिका, कैनडा, मैक्सिको और अर्जेंटीना की महिलाओं में घर बैठे ऐसे स्वरोजगार की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है। अतः महिलाओं की आर्थिक स्थिति और सशक्तीकरण में सुधार लाने के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें स्वरोजगार के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराये जाएं और ऐसा तभी सम्भव है जब विभिन्न संगठन अपने हित में महिलाओं की दक्षता का सार्थक सदुपयोग करें।

भू-मण्डलीकरण के अन्तर्गत सूचना प्रौद्योगिकी की रचना एक क्रान्तिकारी परिवर्तन है। इसके कारण केवल कारखाना उत्पादन का क्षेत्र ही नहीं बल्कि सेवा क्षेत्र में राष्ट्र एवं परराष्ट्र स्तर पर क्रान्तिकारी परिवर्तन घटित हुए हैं। अमेरिका की एक निर्माता-विक्रेता कम्पनी से चेन्नई स्थित एक परिधान फैक्ट्री भी सम्बन्धित है। श्रमिक संख्या पाँच सौ है जिसमें साढ़े चार सौ महिलाएं हैं। इन महिलाओं की औसत आयु 18 से 30 वर्ष है, फैक्स, ई-मेल और कम्प्यूटर पर आधारित उत्पादन व्यवस्था के कारण अमेरिका में बैठा व्यवसायी एक साथ मिस्र, श्रीलंका, बंगलूर, तमिलनाडु, बांग्लादेश, चीन, ताईवान और वियतनाम की कुल 190 फैक्ट्रियों को नियंत्रित करता है। डिजाइन अमेरिका की महिलायें बनाती हैं, ग्वाटेमाल और कोरिया की फैक्ट्रियों में सैम्पल बनाया जाता है और मुख्य कम्पनी को अमेरिकी स्टोर से आर्डर मिल जाता है। अकेले चेन्नई और बंगलूर में 40 फैक्ट्रियों में इसी अमेरिकी कम्पनी के लिए वस्त्र बनाए जाते हैं। सस्ते श्रम के संसाधन के रूप में बड़ी संख्या में स्त्रियां नियुक्त की जाती हैं। नारीवाद श्रम के संदर्भ में सैद्धान्तिक स्पष्टता और नारीवादी दृष्टिकोण की अलग से आवश्यकता इसलिए है क्योंकि जब तक श्रमजीवी महिलाएं इसे प्राप्त नहीं से अपनी सुविधानुसार परिवर्तन कर सकती है। इस सम्बन्ध में किए गए अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि अमेरिका, कैनडा, मैक्सिको और अर्जेंटीना की महिलाओं में घर बैठे ऐसे स्वरोजगार की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है। अतः महिलाओं की आर्थिक स्थिति और सशक्तीकरण में सुधार लाने के लिए यह

आवश्यक है कि उन्हें स्वरोजगार के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराये जाएं और ऐसा तभी सम्भव है जब विभिन्न संगठन अपने हित में महिलाओं की दक्षता का सार्थक सदुपयोग करें।

भू-मण्डलीकरण के अन्तर्गत सूचना प्रौद्योगिकी की रचना एक क्रान्तिकारी परिवर्तन है। इसके कारण केवल कारखाना उत्पादन का क्षेत्र ही नहीं बल्कि सेवा क्षेत्र में राष्ट्र एवं परराष्ट्र स्तर पर क्रान्तिकारी परिवर्तन घटित हुए हैं। अमेरिका की एक निर्माता-विक्रेता कम्पनी से चेन्नई स्थित एक परिधान फैक्ट्री भी सम्बन्धित है। श्रमिक संख्या पाँच सौ है जिसमें साढ़े चार सौ महिलाएं हैं। इन महिलाओं की औसत आयु 18 से 30 वर्ष है, फैक्स, ई-मेल और कम्प्यूटर पर आधारित उत्पादन व्यवस्था के कारण अमेरिका में बैठा व्यवसायी एक साथ मिस्र, श्रीलंका, बंगलूर, तमिलनाडु, बांग्लादेश, चीन, ताईवान और वियतनाम की कुल 190 फैक्ट्रियों को नियंत्रित करता है। डिजाइन अमेरिका की महिलायें बनाती हैं, ग्वाटेमाल और कोरिया की फैक्ट्रियों में सैम्पल बनाया जाता है और मुख्य कम्पनी को अमेरिकी स्टोर से आर्डर मिल जाता है। अकेले चेन्नई और बंगलूर में 40 फैक्ट्रियों में इसी अमेरिकी कम्पनी के लिए वस्त्र बनाए जाते हैं। सस्ते श्रम के संसाधन के रूप में बड़ी संख्या में स्त्रियां नियुक्त की जाती हैं। नारीवाद श्रम के संदर्भ में सैद्धान्तिक स्पष्टता और नारीवादी दृष्टिकोण की अलग से आवश्यकता इसलिए है क्योंकि जब तक श्रमजीवी महिलाएं इसे प्राप्त नहीं स्वरोजगार पाने वालों की संख्या 1,06,000 तक पहुंच चुकी है।

### अध्ययन का तर्क और महत्व

शोध अध्ययन विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महिला सशक्तीकरण पर जानकारी प्रदान कर सकता है। हालांकि, यह महिलाओं के लिए बाहरी दुनिया में एक सीधी खिड़की खुलती है और सूचना अब विरूपण या किसी भी प्रकार के सेंसरिंग के बिना बहती है और उनके पास उनके पुरुष समकक्ष के समान जानकारी तक पहुंच होती है।

इसके अलावा अध्ययन आगरा जिले में महिला सशक्तीकरण के आधार पर वर्तमान परिदृश्य में सूचना प्रौद्योगिकी पर समीक्षा करेगा यह प्रौद्योगिकी विकास में परिप्रेक्ष्य और उनकी वर्तमान स्थिति की अधिक समझ को व्यापक बनाता है। यह अध्ययन इस क्षेत्र के लिए फायदेमंद होगा कि सूचना प्रौद्योगिकी में काम करने वाली महिलाएं और स्थानीय शरीर संस्थानों में निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों को आगरा जिले में आईसीटी के माध्यम से अधिकार प्राप्त किया जा रहा है।

सूचनाओं तक पहुंच महिलाओं के सशक्तिकरण से संबंधित केंद्रीय मुद्दे के रूप में देखी जा सकती है। आईसीटी पुरुषों द्वारा किए गए संभावित खतरों के लिए काउंटर अटैक को लैस करने के लिए महिलाओं के प्रति जागरूकता को बढ़ाएगा।

### अध्ययन के उद्देश्य

वर्तमान अध्ययन “30 प्र0 में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से महिला सशक्तिकरण समृद्ध करना -आगरा जिले का एक अध्ययन” पर केंद्रित है। मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं:

1. सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक विकास।
2. प्रशासनिक और राजनीतिक महिला विकास के स्तर को उजागर करना।
3. सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से पुरुषों और महिलाओं के बीच लैंगिक समानता का मूल्यांकन करना।

### अध्ययन का चयन

मैंने जिले में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग करके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक रूप से महिलाओं को कैसे सशक्त बनाया जा रहा है, इसका विश्लेषण करने के लिए “30 प्र0 में सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से महिला सशक्तिकरण समृद्ध करना-आगरा जिला का एक अध्ययन” चुना है।

### अनुसंधान पद्धति

वर्तमान अध्ययन ने वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक तरीकों को अपनाया है। जहां तक वर्तमान अध्ययन का संबंध है, प्राथमिक और माध्यमिक दोनों डेटा का उपयोग किया गया है। उत्तरदाताओं को जारी संरचित प्रश्नावली के माध्यम से प्राथमिक डेटा एकत्र किया गया है। द्वितीयक डेटा पुस्तकें, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों से एकत्रित किया गया है। पत्रिकाओं, वेबसाइट आदि का उपयोग किया जाता है।

### नमूना डिजाइन

एक नमूना डिजाइन किसी दिए गए आबादी से नमूना प्राप्त करने के लिए एक निश्चित योजना है। यह उस तकनीक को संदर्भित करता है जो शोधकर्ता आगरा जिले में सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र और स्थानीय निकाय संस्थानों में काम करने

वाली महिलाओं की आबादी के लिए वस्तुओं का चयन करने में अपनाएगा।

### नमूना इकाई

इस शोध अध्ययन की दो श्रेणियों में विभाजित है:

आगरा जिले में विभिन्न स्थानीय निकाय संस्थानों में 150 निर्वाचित महिला प्रतिनिधि हैं। प्रत्येक इकाई में, न्यूनतम 3 महिलाएं और अधिकतम 21 महिलाएं चुने गए थे। मैंने इस शोध अध्ययन के लिए सभी 150 चुनाव वाली महिला प्रतिनिधियों को नमूना के रूप में लिया है।

दूसरी श्रेणी में, आगरा जिले के विभिन्न स्तरों पर महिला कर्मचारियों के बीच विभिन्न आईटी कंपनी से 300 उत्तरदाताओं को नमूना के रूप में लिया गया। पूरी तरह से, इस शोध अध्ययन में 450 उत्तरदाताओं का उपयोग किया गया था।

### नमूना स्रोत

अध्ययन के लिए उपयोग की जाने वाली नमूना तकनीक यादृच्छिक नमूना स्तरीकृत है। शोध अध्ययन में आगरा जिले में महिलाओं की कुल जनसंख्या नमूना के रूप में ली गई, उन्हें दो स्तरों में विभाजित किया गया है, और फिर नमूनाकरण किया जाता है। अनुसंधान के वर्तमान अध्ययन में लिंकड स्केलिंग का उपयोग किया जाता है।

### डेटा के प्रकार

इस शोध अध्ययन में मात्रात्मक डेटा का उपयोग किया गया था। प्रश्नावली भरने के लिए उत्तरदाताओं को कुछ विकल्प दिए गए हैं। प्रश्नावली का प्रकार संरचित प्रश्नावली है जिसे अन्यथा क्लोज एंडेड प्रश्न कहा जाता है।

### अध्ययन क्षेत्र में राजनीतिक और प्रशासनिक महिला विकास का स्तर

आगरा जिले में, मैंने स्थानीय निकाय संस्थानों में काम करने वाली निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों के 150 नमूनों का चयन किया है। वे विभिन्न आय समूहों, लिंग, धर्म, शैक्षिक और आय श्रेणियों से हैं, 95 उत्तरदाताओं को शहरी स्थानीय निकायों से लिया गया था और 65 उत्तरदाताओं को अर्ध-शहरी स्थानीय निकायों से लिया गया था। अध्ययन क्षेत्र को मापने के लिए, राजनीतिक और प्रशासनिक महिला विकास के स्तर के बारे में, इस शोध अध्ययन में स्तरीकृत यादृच्छिक नमूने

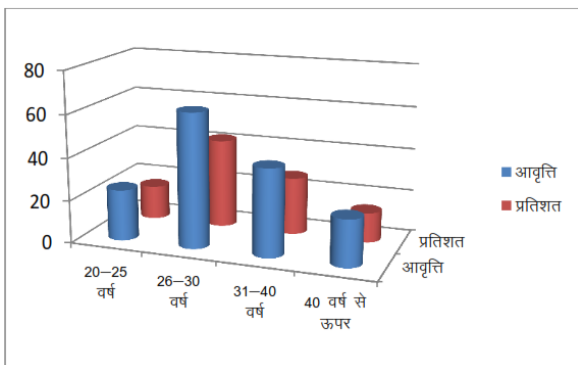
का उपयोग किया गया है। प्रतिवादी की भागीदारी और प्रतिक्रिया के आधार पर, अध्ययन क्षेत्र में निम्नलिखित निष्कर्षों का विश्लेषण किया गया।

तालिका 1: उत्तरदाताओं का आयु समूह

	आयु	आवृत्ति	प्रतिशत
मान्य	20-25 वर्ष	24	16
	26-30 वर्ष	63	42.0
	31-40 वर्ष	41	27.3
	40 वर्ष से ऊपर	22	14.7
	कुल	150	100.0

स्रोत: प्राथमिक डेटा

उपरोक्त तालिकासे पता चलता है कि अध्ययन के क्षेत्र में काम करने वाली निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों में उत्तरदाताओं की आयु की आवृत्ति और वितरण, "फोर पॉइंट स्केल" के आधार पर, 24 उत्तरदाता 20-25 वर्ष की आयु समूह में थे, 63 उत्तरदाता 26-30 वर्ष की आयु वर्ग में थे, 41 उत्तरदाता 31-40 वर्ष के आयु वर्ग में थे और शेष 22 उत्तरदाताओं की आयु 40 वर्ष से अधिक थी।



चार्ट 1: उत्तरदाताओं का आयु समूह

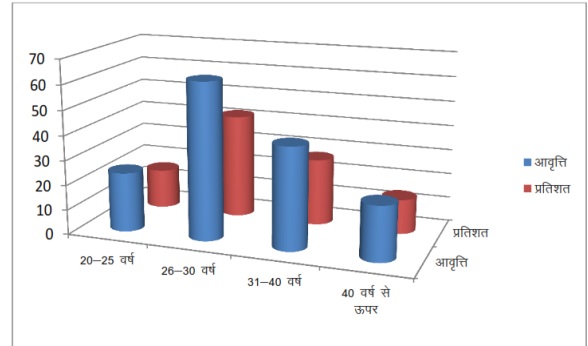
तालिका 2: उत्तरदाताओं का धर्म

	धर्म	आवृत्ति	प्रतिशत
मान्य	हिंदू	124	82.6
	मुस्लिम	8	5.4
	ईसाई	16	10.6
	अन्य	2	1.3
	कुल	150	100.0

स्रोत: प्राथमिक डेटा

उपरोक्त तालिकासे पता चलता है कि "फोर पॉइंट स्केल" के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में काम करने वाली निर्वाचित महिला

प्रतिनिधियों के बीच उत्तरदाताओं के धर्म में आवृत्ति और वितरण का विश्लेषण करती है, 124 उत्तरदाता हिंदू से संबंधित थे, 8 उत्तरदाता मुस्लिम के थे, 16 उत्तरदाता अध्ययन से संबंधित थे ईसाई और 2 उत्तरदाता अन्य श्रेणी के थे।



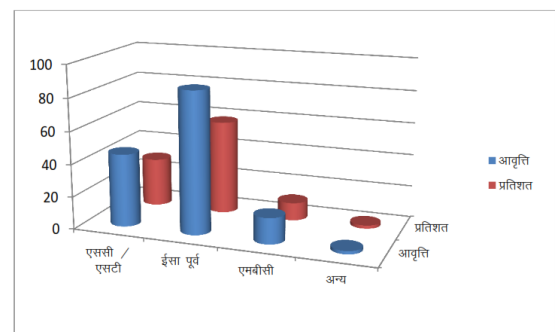
चार्ट 2: उत्तरदाताओं का धर्म

तालिका 3: उत्तरदाताओं का समुदाय

	सामुदायिक	आवृत्ति	प्रतिशत
वैध	एससी / एसटी	45	30
	ईसा पूर्व	87	58.1
	एमबीसी	16	10.6
	अन्य	2	1.3
	कुल	150	100.0

स्रोत: प्राथमिक डेटा

उपरोक्त तालिका विस्तृत करती है कि "फोर पॉइंट स्केल" के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में काम करने वाली निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों के बीच उत्तरदाताओं के समुदाय की आवृत्ति और वितरण, 45 उत्तरदाता अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के थे, 87 उत्तरदाता पिछड़े वर्ग के थे। 16 उत्तरदाता अधिकांश पिछड़े वर्ग के थे और 2 उत्तरदाता अन्य धर्मों के थे।

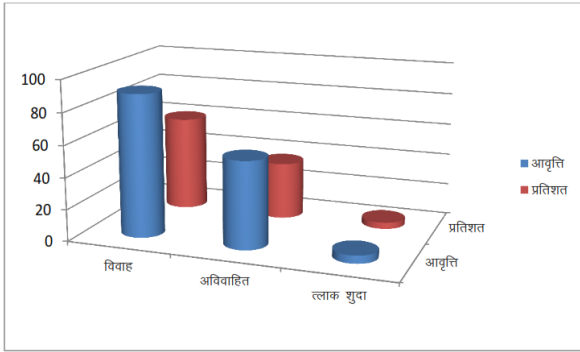


चार्ट 3: उत्तरदाताओं का समुदाय

तलिका 4: उत्तरदाताओं की वैवाहिकस्थिति

	वैवाहिक	आवृत्ति	प्रतिशत
मान्य	विवाह	90	60
	अविवाहित	55	36.7
	त्लाक शुदा	5	3.3
	कुल	150	100.0

स्रोत: प्राथमिकडेटा



चार्ट 4: उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति

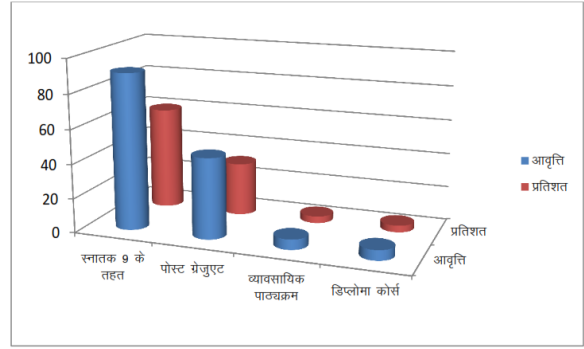
उपरोक्त तालिका जांच करती है कि “थ्री पॉइंट स्केल” के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में काम करने वाली निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों के बीच उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति की आवृत्ति और वितरण, 90 उत्तरदाताओं का विवाह हुआ, 55 उत्तरदाता अविवाहित थे और 5 उत्तरदाताओं का तलाक हो गया था।

तालिका 5: उत्तरदाताओं की शैक्षिक योग्यता

	शिक्षा	आवृत्ति	प्रतिशत
मान्य	स्नातक 9 के तहत	91	60.6
	पोस्टग्रेजुएट	47	31.4
	व्यावसायिक पाठ्यक्रम	6	4.0
	डिप्लोमा कोर्स	6	4.0
	कुल	150	100.0

स्रोत: प्राथमिक डेटा

उपरोक्त तालिकामें उल्लेख किया गया है कि “फोर पॉइंट स्केल” के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में काम करने वाली निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों के बीच उत्तरदाताओं की शैक्षिक योग्यता के लिए आवृत्ति और वितरण, स्नातक के तहत 91 उत्तरदाताओं को पूरा किया गया, 47 उत्तरदाताओं को पोस्ट ग्रेजुएट पूरा किया गया। इसके अलावा, मनाया गया 6 उत्तरदाताओं को व्यावसायिक पाठ्यक्रम पूरा किया गया और उसके बाद 6 उत्तरदाताओं को डिप्लोमा पाठ्यक्रम पूरा किया गया।



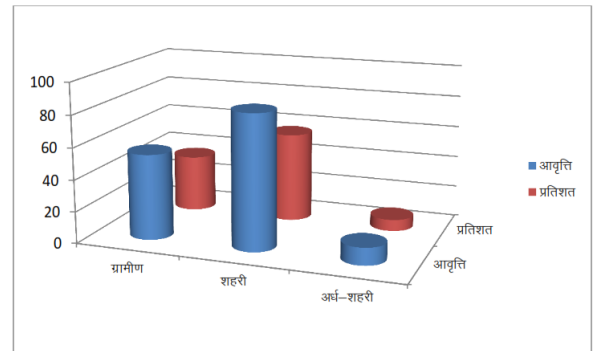
चार्ट 5: उत्तरदाताओं की शैक्षिक योग्यता

तलिका 6: उत्तरदाताओं

	निवास	आवृत्ति	प्रतिशत
मान्य	ग्रामीण	54	36
	शहरी	85	56.7
	अर्ध-शहरी	11	7.3
	कुल	150	100.0

स्रोत: प्राथमिकडेटा

उपरोक्त तालिका में उल्लेख किया गया है कि “थ्री पॉइंट स्केल” के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में काम करने वाली निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों के बीच उत्तरदाताओं के निवास स्थान की आवृत्ति और वितरण, 54 उत्तरदाता ग्रामीण क्षेत्र में रह रहे थे, 85 उत्तरदाता शहरी क्षेत्र में रह रहे थे और 11 उत्तरदाता अर्ध-शहरी क्षेत्र में रह रहे थे।



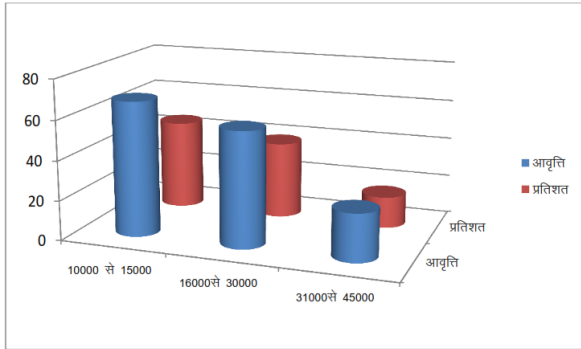
चार्ट 6: उत्तरदाताओं का निवास

तलिका 7: उत्तरदाताओं की आय

	आय (हजारों में)	आवृत्ति	प्रतिशत
मान्य	10000 से 15000	68	45.3
	16000से 30000	58	38.8
	31000से 45000	24	15.9
	कुल	150	100.0

स्रोत: प्राथमिकडेटा

उपरोक्त तालिका विश्लेषण करती है कि “श्री पॉइंट स्केल” के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में काम करने वाली निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों के बीच उत्तरदाताओं की आय में आवृत्ति और वितरण, 68 उत्तरदाताओं वेतन और अन्य स्रोतों से प्रति माह 10000 से 15000 के बीच कमा रहे थे, 58 उत्तरदाता वेतन से 16000 से 30000 प्रति माह कमा रहे थे और अन्य स्रोत और 24 उत्तरदाता वेतन और अन्य स्रोतों से 31000 से 45000 प्रति माह कमा रहे थे।



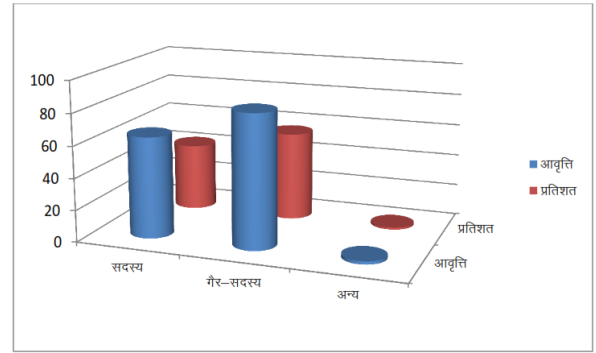
चार्ट 7: उत्तरदाताओं की आय

तालिका 8: राजनीतिक पार्टी में उत्तरदाताओं की सदस्यता

सदस्यता		आवृत्ति	प्रतिशत
मान्य	सदस्य	64	42.6
	गैर-सदस्य	84	56
	अन्य	2	1.3
	कुल	150	100.0

स्रोत: प्राथमिक डेटा

उपरोक्त तालिका में पाया गया है कि “श्री पॉइंट स्केल” के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में काम करने वाली निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों के बीच उत्तरदाताओं की सदस्यता की आवृत्ति और वितरण, 64 उत्तरदाताओं का राजनीतिक पार्टी में सदस्यता कार्ड था, 84 उत्तरदाताओं के पास सदस्यता कार्ड नहीं था। राजनीतिक दल में और उसके बाद 2 उत्तरदाता अन्य श्रेणी के थे



चार्ट 8: राजनीतिक पार्टी में उत्तरदाताओं की सदस्यता

तालिका 9: आईटी से संबंधित किसी भी योजना के बारे में जागरूकता

क्या आप आई टी विकास से संबंधित किसी भी योजना से अवगत हैं		आवृत्ति	प्रतिशत
मान्य	हाँ	6	4
	नहीं	40	26.7
	कुछ हद तक	87	58
	कोई जानकारी नहीं	17	11.3
	कुल	150	100.0

स्रोत: प्राथमिक डेटा

उपरोक्त तालिका में बताया गया है कि “फोर पॉइंट स्केल” के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में काम करने वाली निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों के बीच आईटी योजनाओं की जागरूकता के लिए आवृत्ति और वितरण, 6 उत्तरदाताओं को आईटी विकास योजनाओं के बारे में पता था, 87 उत्तरदाताओं को आईटी योजनाओं के बारे में पता था। कुछ हद तक, 40 उत्तरदाताओं को आईटी विकास से संबंधित योजनाओं के बारे में पता नहीं था और इसके बाद 17 उत्तरदाताओं को आईटी विकास योजनाओं के बारे में पता नहीं है

तालिका 10: मीन, एसडी, टी-वैल्यू और इंटरनेट के उपयोग के च अंसनम ने स्थानीय निकाय संस्थानों और आईटी में महिलाओं के कामकाज के बीच जीवन को आसान बना दिया है।

जनसंख्या	एन	मीन	एसडी	टी-मूल्य	p value
स्थानीय निकाय संस्थान	150	2.000	0.534	1.783	0.001''
सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र	300	5.132	0.945		

स्रोत: प्राथमिक डेटा

उपरोक्त तालिका इस बात की छानबीन करती है कि स्थानीय निकाय संस्थानों में महिलाओं के काम करने और इंटरनेट के उपयोग पर सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में महत्वपूर्ण अंतर है, जिससे जीवन आसान हो गया है।

### निष्कर्ष

राष्ट्रीय एजेंडा पर सूचना प्रौद्योगिकी के उद्भव और विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा आईटीनीतियों की घोषणा के साथ, “सुशासन, सतत विकास, अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण और सामाजिक सशक्तिकरण के लिए उपकरण के रूप में कोर प्रौद्योगिकियों और ई-गवर्नेंस के अभिसरण को मान्यता दी गई है। सूचना लोकतंत्र की कुंजी है, आईटीके आगमन के साथ, आम आदमी के लिए वैश्विक जानकारी का उपयोग करना संभव हो गया है। इलेक्ट्रॉनिक संचार के दायरे में दूरसंचार, प्रसारण, सूचना प्रौद्योगिकी, सक्षम सेवाएं और उद्योग शामिल हैं, जो कि वैश्विक सूचना अवसंरचना (जीआईआई) के लिए गहरा बदलाव लाने के लिए, प्रमुख परिवर्तनों से गुजरना पड़ता है, जो टेक्स्ट, डेटा, आवाज या वीडियो के रूप में किसी भी प्रकार की जानकारी को ले जाने में सक्षम होंगे। सूचना अब मोटे तौर पर टेलीफोन में आवाज, फैक्स और समाचार पत्रों में पाठ, वीडियो और टेलीविजन प्रसारण में छवियों और कंप्यूटरों में डेटा को परिभाषित करने के लिए परिभाषित की गई है। सभी जानकारी को डिजिटल, परिवहन, संग्रहीत, पुनर्प्राप्त, संशोधित और फिर वितरित किया जा सकता है। ये सभी आम बुनियादी ढाँचे पर परिवहन योग्य हो रहे हैं। उच्च गति, प्रसारण, डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक राजमार्ग, उभरते डिजिटल तकनीक, नए नेटवर्क विकल्प (इंटेलेजेंट नेटवर्क), उच्च बैंडविड्थ संचार प्रौद्योगिकी, और नेटवर्क कार्यों और सेवाओं के लिए अत्याधुनिक सॉफ्टवेयर, इलेक्ट्रॉनिक संचार प्रणालियों के विकास में नई तकनीक के लिए रुझान स्पष्ट हैं।

### उपसंहार

सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग में उनके रोजगार के संदर्भ में महिलाओं की स्थिति उनके व्यक्तिगत जीवन और पारिवारिक जीवन के साथ-साथ बड़े संदर्भ में कई मुद्दों से जुड़ी है। प्रतिस्पर्धात्मक करियर विकल्प, आत्म-छवि का निर्माण, व्यक्तिगतता पर जोर देना, व्यावसायिक क्षमता, नए पारिवारिक ढाँचे, संघर्ष प्रबंधन, समाज में समानता और सशक्तिकरण के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण जैसे कुछ मुद्दों की जाँच महिलाओं की स्थिति बढ़ाने की दिशा में की जा सकती है। व्यक्तियों के रूप में, महिला श्रमिकों को एक बेहतर आत्म-छवि का निर्माण करके अपने व्यक्तित्व को मुखर करने की

आवश्यकता है। यह विभिन्न केंद्र में विभिन्न कैरियर विकल्पों का लाभ उठाने के लिए पुरुषों के साथ प्रतिस्पर्धा करके किया जा सकता है। परिवार और कार्यस्थल दोनों में निर्णय लेने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होना भी उनके लिए आवश्यक है ताकि वे प्राधिकरण की निश्चित मात्रा का आनंद ले सकें। समाज में समानता का दावा करने और दावा करने के लिए अनुकूल सामाजिक दृष्टिकोण को स्वीकार करने और बढ़ावा देने की भी आवश्यकता है। सबसे मज़बूत मुद्दा जो महिला कार्यकर्ताओं द्वारा नियंत्रित किया जाना है, वह है ‘संघर्ष प्रबंधन’। अपने व्यावसायिक जीवन में, महिला श्रमिकों को लिंग के आधार पर पक्षपात किए बिना कार्यस्थल में सक्षमता के साथ अपने कार्यों को संभालने और स्वस्थ अंतर-व्यक्तिगत संबंधों को बनाए रखने की आवश्यकता होती है। इसी समय, महिला श्रमिकों को पारिवारिक संरचनाओं को बदलने के संदर्भ में परिवार के सदस्यों के साथ रिश्तों को फिर से बातचीत करने के लिए हर संभव प्रयास करना होगा। उन्हें नए कामकाजी पैटर्न को भी शामिल करना होगा, पुरुष सहकर्मियों के साथ अंतर-व्यक्तिगत संबंधों की बदलती प्रकृति के अनुकूल होना चाहिए, प्रबंधकीय केंद्र के साथ तालमेल बनाना होगा और कार्य स्थल में उच्च स्तर के मनोबल को बनाए रखना होगा।

### संदर्भ

1. बिजू एमआर (2012), “ग्रामीण विकास के तहत ग्रामीण विकास”, संकल्पना प्रकाशन कंपनी, नई दिल्ली।
2. कैरोलीन स्वीटमैन (2005), “लिंग और सहस्राब्दी विकास लक्ष्य” ऑक्सफैम प्रकाशक, पृष्ठ 13।
3. कार्लोइन वामाला (2012), “आईसीटी के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना”, स्पाइडर प्रकाशन, स्टॉकहोम।
4. सेसिलिया स्वास्ती मिटर (2005), “लिंग और डिजिटल अर्थव्यवस्था परिप्रेक्ष्य”, ऋषि
5. सेंटर फॉर रिसर्च इनोवेशन एंड साइंस पॉलिसी (2011), “आईसीटी और भारतीय ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण: हम किस पहल की पहल सीख सकते हैं?”, हैदराबाद, पृष्ठ 1-2।
6. द्विवेदी (2008), “इंडिया ईयर बुक”, टाटा मैकग्रा-हिल एजुकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 25-28

7. फ्लोरेंस। एमके (2015), “आगरा जिले के ग्राम क्लस्टर में स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों की सामाजिक आर्थिक समझ”, आर्थिक और व्यापार समीक्षा के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, तमिलनाडु
8. ग्रामीण वसूली और विकास (2011) की फाउंडेशन, “आगरा जिले का सामाजिक - आर्थिक अध्ययन”, नई दिल्ली।
9. गुप्ता बीबीआर (2012), “पंचायत राज की भागीदारी और सशक्तिकरण”, ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।
10. हाजरा कुमार (2005), “महिला सशक्तिकरण, मुद्दे, चुनौतियाँ और रणनीतियाँ”, रीजेंसी प्रकाशन, नई दिल्ली।
11. हाफकिन और नैन्सी टैगगार्ट (2001), “लिंग और सूचना समाज में विकासशील देशों: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन”, शैक्षिक विकास अकादमी, वाशिंगटन डीसी, पृष्ठ 25
12. होम्स और रेबेका (2004), “ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण को आगे बढ़ाना: सुप्रसिद्धि सेवा में सूचना संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी)”, दक्षिण अफ्रीका, पीजी 5-6।

---

**Corresponding Author**

**Sunita Singh\***

Department of Sociology, Swami Vivekananda University, Sagar (MP)